Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मेवाड़ के गुहिल राजवंश का उत्पत्ति स्थल : इल्व दुर्ग ईडर

डॉ. अजात शत्रुसिंह शिवरती* सुरेन्द्र सिंह चौहान**

* आचार्य (इतिहास) पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी (इतिहास) पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – भारत में प्रतिष्ठित क्षत्रिय जातियों की संख्या 36 मानी जाती है। इन 36 क्षत्रिय राजवंशो में 16 सूर्यवंशी, 16 चन्द्रवंशी और 4 अग्निवंशी राजवंश सम्मिलित थे। इनमें से कई राजवंश पौराणिक युग से लेकर वर्तमान तक अस्तित्व में बने रहे। तथापि कुछ राजवंशों का अस्तित्व समय के साथ समाप्त हो गया जबकि कुछ राजवंशो के लोग अलग-अलग स्थानों और समय परिवर्तन के साथ भाषा समूहों में परिवर्तित होते गये। कुमारपाल नामक काव्य से राजपूत के कुल 36 वंशो की सूची प्राप्त होती है। जिनमें उत्तर भारत में मेवाड़ के सिसोदिया वंश की 24 उपशांखाऐं, चौहानों की 24, परमारों की 35, झालावंश की 9 राठौड़ों की 13, सोलंकियों की 24 बड़गुजरों की 2 शाखा थी वही भाटियों की 7 और गौड़ों की कुल 8 शाखा अस्तित्व में रही है। उत्तरभारत में प्रचलित गुहिल टाँक, डाबी, कच्छावा, जोइया, दायमा, मोरी, वल्ला, खरवड़ ऐसी जातियाँ हैं, जिनकी कोई भी उपशाखा प्राप्त नहीं होती है।[1]

मेवाड़ का गुहिल राजवंश – रघुवंश सिरमौर मेवाड का गुहिल वंश न केवल मेवाड़ में ही वरन सारे भारत वर्ष में सदैव प्रतिष्ठित रहा है। मान्यताओं के अनुसार नेपाल राष्ट्र का वंश भी मेवाड़ राजवंश से सम्बन्धित रहा है। प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार महाराणा रतनसिंह का छोटा भाई कुम्भकर्ण ने मेवाड़ से कुमाउ होता हुआ पाल्या गया यहीं उसने अपना राज्य स्थापित किया। वहां का राजा बना और शाह कहलाया। इसी समय पृथ्वी नारायण शाह द्वारा नेपाल विजित किया गया। मान्यताओं के अनुसार मराठा शासक शिवाजी का विश्व प्रसिद्ध वंश भी मेवाड़ सम्बन्धित था और सीसोद वंश ही है। प्राप्त साक्ष्यों के कारण अनुसार राणा लक्ष्मण सिंह के पुत्र अजय सिंह ने अपने दोनों पुत्रों सज्जन सिंह और क्षेम सिंह को मुंजा नाम के बालेचा का सिर काट नहीं ला पाने के मेवाड़ राज्य से निष्कासित कर दिया था। फलत: वे मेवाड़ छोड़कर दक्षिण भारत की ओर चले गये। इन्हीं के वंशज राणा भैरव सिंह (भौंसला) हुए जिन्होंने मुधोल पर अधिकार किया, इन्हीं भौंसले के वंश में उग्रसेन हुए जिनके दो पुत्र कर्णसिंह एवं शुभकर्ण हुए, कर्ण वंशज घोरपडे कहलाये एवं शुभकर्ण के वंशज में शिवाजी हुए। इस प्रकार महाराष्ट्र में मुधोल (भौंसले) रायबाग बैन के (घोरपडे) शुभकर्ण के वंश में कोल्हापुर में शिवजी तथा सावन्त वाड़ी में सोम सामन्त कहलाए। ऐसे ही नागपुर, बराट तथा मद्रास प्रांत में तंजौर एवं विजीयानगर में शिवाजी के भाई बैका जी एवं सया जी ने अपने-अपने राज्य स्थापित किए।[2]

मेवाड़ का गहलोत वंश न केवल राजस्थान में अपितु सम्पूर्ण हिन्दुस्तान व उसके बाहर विस्तृत है। इस वंश की शाखाऐं उदयपुर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, शाहपुरा, भावनगर, लाठी, राजपीपला, बड़वानी, धर्मपुर, नेपाल, अली राजपुर, विजयनगर आदि स्थानों पर विस्तृत है। जो अनेक नामों से इतिहास में प्रसिद्ध है।

मेवाड़ के गुहिल वंश की उत्पत्ति – प्राचीन समय से वल्लभीपुर में अयोध्या के महाराजा श्री रामचन्द्र जी के वंश का शिलादित्य छठा शासन करता था। सन् 524 (वि.स. 580) में उसके राज्य पर यवनों ने आक्रमण किया। संभवत: ये यवन, हुण, शक या युनानी शासकों से संबंधित थे। यह यवन आक्रमण जैसा कि चीनी यात्री हेवनसांग एवं कर्नल जेम्स टॉड के वृतान्तों से ज्ञात होता है अति प्राचीन शक्तिशाली वल्लभी के राजवंश के साथ एक विकसित एवं समृद्ध नगर के अंत का समय था। यद्यपि राजा शिलादित्य ने बड़ी विरता से विदेशी आक्रान्ताओं का मुकाबला किया, किन्तु अन्तत: वह उस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ। जब शिलादित्य की पत्नी पुष्पावती को अपने पति की मृत्यु का समाचार मिला तो वह व्यथित और दु:खी मन से सती होने लगी किन्तु रानी के गर्भ में शिलादित्य का वंशज मौजुद था। अत: लोगों ने उसे सती होने से रोक लिया। पुष्पावती लोगों की सलाह मानकर अपने गर्भ की रक्षार्थ एक निर्जन पहाड़ी पर बनी गुफा में जाकर रहने लगी। इसी निर्जन गुफा में उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। पुत्र उत्पन्न होने के बाद पुष्पावती ने उसके पालन-पोषण का दायित्व कमलावती नामक एक स्थानीय महिला को सौंप दिया और और स्वंय ने सतीत्व की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग कर दिया। कमलावती ने बालक का लालन-पालन पुत्र की तरह किया। क्योंकि कुंवर का जन्म निर्जन एवं गहरी गुफा में हुआ था। अत: उसका नाम गोहो (गुहा) रखा गया। सात वर्ष तक इस कमलावती ने गुहा-गुह का लालन-पालन कर के ईडर की पर्वतीय क्षेत्र में वड़नगर के योग्य गुरु आश्रम में उसे शिक्षा दिशा हेतु सौंप दिया। जहां वह बालक क्षात्रधर्मानुरूप शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करने लगा। बालक गुहादित्य ने अपने क्षत्रियोचित स्वभाव से वयस्क होने के पश्चात् ईडर प्रदेश की भील मण्डली के साथ मैत्री सौहार्द्र तथा सहयोग के सम्बन्ध स्थापित किये। इसके पश्चात् आत्मनिर्भर होने पर बड़नगर का क्षेत्र छोड़कर वह ईडर के भील क्षेत्र में चला गया। ईडर के भील समुदाय ने भी अपने क्षेत्र की सुरक्षार्थ उसकी वीरता, साहस से प्रभावित होकर गुहादित्य को अपना राजा स्वीकार कर लिया। ईडर के माण्डलिक भीलों द्वारा गुहादित्य का राज्याभिषेक कर दिया गया।[3]

ईडर राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि – स्वतंत्रता से पूर्व ईडर हिन्दुस्तान के पश्चिमी भाग में स्थित बॉम्बे प्रान्त (बॉम्बे स्टेट) की माहीकांठा एजेन्सी में तत्कालीन मारवाड़ स्टेट की एक प्रमुख रियासत थी।[4] जिसकी भौगोलिक

सीमा का कुछ भाग मेवाड़ से मिलता था, किन्तु अधिकांश भाग गुजरात तथा माहीकांठा में सम्मिलित था। ईडर के पश्चिम में अहमदाबाद जिले के प्रान्तीज परगने के गायकवाड़ राज्य, ढांता व सिरोही राज्यों के गांव स्थित थे। ईडर राज्य की उतरी सीमा मेवाड़ रियासत के भू-भाग से संलग्न थी। प्राचीन समय में ईड़रगढ़ अति समृद्ध पुरातन स्थलो के कारण जैन, शैव व सनातन धर्म से सम्बन्धित स्थल था। जो कई द्रुलर्भ वृक्षों, फल, फूलों व प्राकृतिक औषधिय वनों से आच्छादित भू-क्षेत्र था।

कर्नल टॉड द्वारा अपनी पुस्तक 'पश्चिमी भारत की यात्रा'[5] में भारत के पश्चिमी क्षेत्रों के भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक ऐतिहासिक घटनाओं, ऐतिहासिक पुरुषो स्थलों तथा मार्गो का स्वयं भ्रमण वृतान्त प्रस्तुत किये गये। कर्नल टॉड ने ईडर का इतिहास इसके सीमावर्ती क्षेत्रों मेवाड़ तथा मारवाड़, गुजरात के अन्हिलवाड़ा पाटन के प्राचीन गौरवपूर्ण स्थलों के विशेष संदर्भ सहित लिखा है। उन्होंने आबू, रणकपुर, पालनपुर, अम्बाजी, जिंजीवाड़ा के दुर्ग भावनगर, वल्लभी इत्यादि के वृतान्तों का लेखन उपलब्ध जैन, ब्राह्मण, चारण, भाट, साहित्य के संकलन के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। उन्होंने अपने लेखन में पुरासम्पदा, शिलालेखों, ताम्रपत्रों, स्मारकों के आधार पर उपलब्ध 'आबू माहात्म्य' जैसे ग्रंथ का प्रयोग किया है। अपने लेखन के समय कर्नल टॉड को फॉर्ब्स रचित 'रासमाल' की जानकारी नहीं थी। वर्तमान समय में गुजरात इतिहास हेतु टॉड की पुस्तक के समान राजस्थान की रासमाला उपयोगी सिद्ध हुई है। जो ईडर के इतिहास हेतु भी लाभदायी है।
ईडर के प्रमाणिक ऐतिहासिक[6] ग्रंथों से स्पष्ट है कि यहां मुख्य रूप से भील, राजपूतों का प्रभाव था। यहां के ठाकुर मूलरूप से राजपूत वंशज है। किन्तु ईडर के राजा भील वर्ग के साथ वैवाहिक सम्बन्धों की वजह से इन्हें अन्य राजपूत वर्गों से पृथक माना जाता था। यहां के राजपूत ठाकुरों में चौहान, राठौड़, जाडेजा, चावड़ा इत्यादि मुख्य है। ईडर मार्ग गुजरात के हिम्मतनगर, पालनपुर, अम्बाजी, आबू, देलवाड़ा क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। अहमदाबार, आबू, सिरोही, अजमेर रेल मार्ग में प्रान्तीज रेल्वे से जुड़ा होने से ईडर, खेड़ब्रह्मा को संयुक्त करता है।[7]

ईडर का पौराणिक इतिवृत- पौराणिक ग्रंथो में सतयुग काल में ईडर प्रवेश को 'ईल्व दुर्ग'[8] के नाम से जाना जाता था। तो द्वापर युग में इस क्षेत्र को 'शैलवन' के रूप में सम्बोधित किया गया। पुराणों में उल्लेखित है कि जब अयोध्या के राजा रामचन्द्र जी लंका विजय के बाद विभीषण का राज्याभिषेक कर पुन: अयोध्या लौट रहे थे तब विभीषण के पक्ष के कुछ लंकावासी आर्यावर्त्ता में आने के इच्छुक हुए। तब लंकावासियों को राजा रामचन्द्र जी ने उत्तर भारत में स्थित ईडर प्रदेश के भीषण जंगलों के शैलवन क्षेत्र में रहने के लिए उपर्युक्त स्थल प्रदान किया।[9]

मेवाड़ का गुहिल राजवंश : अयोध्या के राजा रामचन्द्र का वंशधर - पौराणिक आधार : ईडर के वेणीवच्छ द्वारा राज्य स्थापना - अति प्राचीन समय में हरिद्वार (गंगा तट के उत्तरी भू-भाग) के उत्तरी भाग में स्थित में श्रीनगर में सूर्यवंशी राजा पदमसेन नामक एवं वृद्ध राजा हुआ करता था। जो संतान विहीन था। उसे संतानविहीन चिन्तामग्न स्थित देखकर एक ब्रह्मज्ञानी ने पुत्र प्राप्ति की एक औषधि प्रदान की। जिसके सेवन से राजा पदमसेन की रानी गर्भस्थ हो गयी। प्रचलित किंवद्तीयों के अनुसार उसी समय आकाश मार्ग से एक गरूड़ हाथी को लेकर उड़ रहा था, सहसा उसकी दृष्टि राणी के सुन्दर शरीर पर पड़ी। वह मांस भक्षण की खोज में उड़ते-उड़ते नीचे आ गया और गर्भस्थ रानी को उड़ा कर लुप्त हो गया। राजा ने अपनी रानी के विलुप्त होने का समाचार सुना और उसकी खोज प्रारम्भ की परन्तु काफी प्रयत्न करने पर भी उसे रानी का कोई पता नहीं चला। क्षेत्र में प्रचलित कथा के अनुसार वह गरूड़ उड़ क़र अपने शिकार रानी के भक्षण करने हेतु ईडर पहाड़ी के इस इल्व दुर्ग पर उतरा। इसी समय रानी ने गर्भ पिड़ा के कारण जोरदार रूदन प्रारम्भ कर दिया। इस पर वह पक्षी (गरूड़) उस गर्भस्थ रानी को वहीं छोड़ कर चला गया। ईडर के इस निर्जन वन में एक तपस्वी की दृष्टि रानी पर पड़ी तो उसने रानी तथा नवजात पुत्र की रक्षा के उपाय किये। लम्बे समय के बाद ईडर के स्थानीय भील समुदाय के माण्डलिकों द्वारा उसका राज्याभिषेक कर दिया गया।

आइन-ए-अकबरी नामक पुस्तक में अबुल फजल ने तथा कश्मीर के इतिहास से सम्बधित कल्हण की रचना 'राजतंरगिणी' में जिन शासकों का वंश क्रम दिया है, उसमें कश्मीर में अयोध्या के राजा रामचन्द्र के पुत्र लव और उसके उत्तराधिकारी किशन, सुरेन्द्र, जनक, अशोक, जलोक, कनिष्क आदि का नाम मिलता है। इसी हिन्दु राजवंश में प्रतापादित्य, राजा जयेन्द्र, मेघवन श्री सतसेन, प्रवरसेन (मेघवन के उत्तराधिकारी) के नामोल्लेख भी प्राप्त हुए है। आईन-ए-अकबरी[12], भाग-3 के वृतान्त में आये प्रवरसेन सम्भवत: भविष्यपुराण में वर्णित ईडर के पहाड़ पर ऋषि द्वारा रक्षित कश्मीर के राजा पदमसेन की गर्भस्थ रानी और उनके पुत्र से सम्बन्धित है। सम्भवत: उस रानी से उत्पन्न वच्छराज नामक जिस शिशु का पालन-पोषण और नामकरण उसी ऋषि द्वारा वत्सराज (वच्छराज) रखा गया। जो बाद में स्थानीय भील समुदाय के सहयोग से राजा बना। जिसे कालान्तर में गुहिल, गुह अथवा गुहादित्य शब्दों से सम्बोधित किया गया।

इसी गुहिल या गुहादित्य के वंश में बाप्पा (काल भोज) हुआ। जिसकी कथा मेवाड़ की राजधानी नागदा में रहने वाले ब्राह्मण परिवारों द्वारा पालित पोषित और पल्लवित की गई। मेवाड़ में स्थित एकलिंगजी मन्दिर की पूर्वी दिशा में एक पर्वत जहाँ ऋषि हारित निवास करते थे, वह बाप्पा रावल के गुरु थे। एकलिंग पुराण व भविष्य पुराण की कथाएँ मुख्य रूप से मेवाड़ राज्य में गुहिल[13]/सिसोदिया वंश की स्थापना के आधार है। तद्नन्तर मेवाड़ की ख्यातें, कथाएँ, वाताऐं, दंतकथाऐं एवं एकलिंगपुराण सहित (एकलिंग महात्म्य) ईडर में गुहिल के जन्म, राज्याभिषेक, गुहिल पुत्र नागादित्य व राजा अपराजित बप्पा रावल[14] के जीवन की घटनाओं को समझने में सहायक है। इसी सूर्यवंशीय परम्परा के क्रम में ईडर में गुहिलवंश की स्थापना और गुहिल पुत्र-पुत्रादियों के द्वारा मेवाड़ के नागदा में बप्पारावल के राजऋषि हारित द्वारा मेवाड़ राज्य[15] की प्रतिष्ठा स्थापित की गई। उक्त विवरण से यह प्रमाणित हो जाता है कि ईडर दुर्ग का शासक वत्सराज (बच्छराज) महाभारत कालीन युधिष्ठिर का समकालीन रहा हो, जो कश्मीर के राजा पदमसेन का पुत्र था। इसी पदमसेन का वंशज कश्मीर के राजा के वंशक्रम में प्रवरसेन था। जो ऋषि हारित (शैव धर्म का अनुयायी था, एकलिंग मन्दिर के नाथ सम्प्रदाय का आचार्य) द्वारा पालित दीक्षित बाप्पा के पिता प्रपितामह गुहिल व नागादित्य के जीवनवृत्ता से सम्बन्धित था। इसी कारण मेवाड़ याने मेदपाट में भगवान एकलिंग को राजा मानकर स्थानीय राजऋषि हारित ने अपनी शक्ति समर्थ, धन, तपबल से न केवल मेवाड़ की रक्षा की अपितु उसके पूर्वजों के विलुप्त इतिहास संस्कृति को अक्षुण्ण रखने हेतु बाप्पा को मेवाड़ का राज्य प्रदान कर उसे मेवाड़ अधिपति भगवान एकलिंगजी का दीवान नियुक्त किया। भविष्यपुराण एवं एकलिंग माहात्म्य का तुलनात्मक अध्ययन करने से निष्कर्ष निकलता है कि ईडर दुर्ग (ईडर में) वच्छराज के जन्म,

पालन-पोषण तथा नागदा में बाप्पा रावल के पालन-पोषण के जिन ब्रह्मऋषियों का योगदान रहा। वे निश्चित रूप से नीतिज्ञ व धर्मदूत थे।

ईडर में माण्डलिक भील ने अपने हाथ के अंगूठे को काटकर कहा कि मेरे कोई पुत्र नहीं है इसीलिए तुम (गोह/गुहादित्य) ईडर की गद्दी के स्वामी रहोंगे। तत्पश्चात् सभी भील सरदारों ने उसको अपना राजा स्वीकार किया। इस प्रकार शीलादित्य का पुत्र गोह/गुहादित्य ईडर में एक स्वतंत्र राज्य का स्वामी हो गया। गोहादित्य की पालक माता कमलावती ने माण्डलिक के उपकार के बदले वचन दिया कि ईडर क्षेत्र के भीलों की सुरक्षा व सुशासन में गुहादित्य के वंशज 'गोहलोत' सिसोदिया राजपूत कहलायेगें। गोह ने ईडर परिक्षेत्र में उझडे भू-भाग को समृद्ध किया और वहां की बस्तियों को पुन: आबाद कर उत्तम तरीके से शासन कर जनकल्याण और न्यायकारी कार्य सम्पन्न किए। तपश्चात् गुहादित्य के वंशजों ने अगली आठ पीढ़ियों तक ईडर प्रदेश के सूर्यवंशी राजा रामचन्द्र के इक्ष्वाकु वंश के आदर्शों पर चलकर शासन किया। नागादित्य के शासन में भील समुदाय ने ईडर की गद्दी हेतु अपना अधिकार करने का प्रयत्न किया। परस्पर सिंहासन के स्वामित्व के मामले में राजा गुहादित्य की धोखे से हत्या कर पुन: भील नेताओं ने ईडर पर अधिकार कर लिया। सन् 715 वि.सं. 772 में नागादित्य की हत्या के समय ईडर की सत्ता उसकी माता राजमाता कमलावती के हाथों में थी। उसके पुत्र बाप्पा को जो कि तीन वर्ष का बालक था, ईडर ने बाणभट्ट नामक ब्राह्मण सुरक्षित गुप्त स्थल पर ले गया। रानी के निवेदन पर इस संकट मोचक बाणभट्ट नामक ब्राह्मण ने (जालोर के पास 20 मील दूर मारवाड़ की सीमा पर स्थित) बाप्पा रावल को मंडेर के किले में कुछ समय तक सुरक्षित रखा।

उस समय मंडेर के दुर्ग के एक यदुवंशी भील रहता था। उसने बाप्पा रावल को ब्राह्मण बाणभट्ट के साथ अरावली पर्वत श्रृंखला में पाराशर अरण्य (पाराशर वन) में स्थित नागेन्द्र शहर (नागदा नगरी) में पहुंचाया। नागदा नगरी में ब्राह्मणो ने इस राजपुत्र का वयस्क होने तक पालन-पोषण किया। ख्यातों व पौराणिक ग्रंथो के अनुसार नागदा नगर के पास बापा रावल शैव मतावलम्बी ऋषि हारित के सम्पर्क में आये, जो स्वयं भगवान एकलिंग मन्दिर और स्थानीय देव विंध्यवासिनी का पुजारी था।

सारांश – प्राचीन से अर्वाचीन युग तक मेवाड़ के राजाओं का राजवंश प्रथम 'सूर्यवंशी', फिर 'गुहिलपुत्र' व गुहिलोत और बाद में 'सिसोदिया' नाम से प्रसिद्ध है। उदयपुर के महाराणा न केवल भारत में वरन् सम्पूर्ण एशिया, अरब, चीन तक 'हिन्दुआ सूरत' के रूप में स्मरणीय है। अयोध्या के राजा रामचन्द्र और उसके पुत्र लव से सुमित्र तक सूर्यवंशी होने का उल्लेख भागवत पुराण व स्कन्ध पुराण में मिलता है। इसीलिए इस वंश की वंशावली में सन्देह की गुंजाईश नहीं है। महाराणा मेवाड़ की सुमित्र के बाद से गुहादित्य तक की वंशावली की प्रमाणिकता सिद्ध करने बाबत् कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलते है। कर्नल टॉड ने विजयभूप और कनकसेन नामक शासकों को वल्लभी राज्य से पूर्वजों में माना और इसी आधार पर टॉड ने 'शत्रुंजय माहात्म्य' आदि जैन ग्रंथों के आधार पर मेवाड़ के राजाओं को वल्लभी के पतन के बाद मेवाड़ में गुहिल राजवंश की स्थापना करने वाला गुहिल के पुत्र-पुत्रादि बाप्पा रावल के पूर्वजों को ईडर से मेवाड़ आकर नागदा (नागद्रह नगर) में आना प्रमाणित किया। पं. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा, अबुल फजल की आईन-ए-अकबरी एवं मुहणोत नैणसी की ख्यात में मेवाड़ के शासकों का दक्षिण भारत की तरफ से उत्तर भारत के वल्लभी क्षेत्र में आने, तत्पश्चात् ईडर, किष्किन्धा (कल्याणपुर) से वर्तमान उदयपुर के निकट स्थित पारसर वन स्थित नागद्रह नगर (नागदा) में राजधानी बनाकर शासन करने के वृतान्त वर्णित है। जो इतिहास प्रसिद्ध इक्ष्वाकु वंशज अयोध्या नरेश रामचन्द्र के वंशजों से सम्बन्धित माने जाते है।[16]

इस प्रकार सिद्ध होता है कि वल्लभी शाखा के मुख्याधिकारी उदयपुर मेवाड़ के महाराणा है। कुण्ड ग्राम (नागदा नगर के निकट) राजा अपराजित की वि.सं. 718 (ई. सन् 661) की एवं आहड़ ग्राम की शाक्तकुमार की प्रशस्ति, उदयपुर में शारणेश्वर की प्रशस्ति वि.सं. 1010 इत्यादि में मेवाड़ के गुहिल शासकों की वंशावली मिलती है, इसकी पुष्टि पं. गौरीशंकर ओझा को कदमाल ग्राम से मिले एक ताम्रपत्र से भी हो जाती है। साथ ही ओझा द्वारा उल्लेखित चीरवा गाम की महारावल समरसिंह के समय की प्रशस्ति से भी इसकी क्रमबद्धता मिलती है। उक्त सभी प्रशस्तियों, ताम्रपत्रों व प्राचीन पौराणिक ग्रंथों तथा ख्यातों के आधार पर मेवाड़-महाराणा कुम्भा कालीन प्रसिद्ध ग्रंथ 'एकलिंग माहात्म्य'[18] की रचना की गई। जिसमें मेवाड़ के महाराणाओं की वंशावली, अयोध्या के सूर्यवंशी राजा राम, लव से सुमित्र, गुहिल, बाप्पा, हम्मीर से कुम्भा तक प्रमाणित होती है। ऐसी ही प्रमाणिकता कुम्भलगढ़ प्रशस्ति, चितौड़ की कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति व आबू प्रशस्ति इत्यादि के आधार पर महाराणा राजसिंह के समय विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति, राजप्रशस्ति से भी प्राप्त होती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. श्यामलदास, वीर विनोद, भाग प्रथम, (संपादक-डॉ. रघुवीर सिंह), मंयक प्रकाशन, जयपुर, वर्ष, 1986
2. राठौड़ औंकार सिंह, संतगोपालदास निर्वाण- मेवाड़ की अनुठी संस्कृति संस्करण, 2011, चिराग प्रकाशन, हिरण मगरी, प्रभातनगर, उदयपुर, पृ. 39-53
3. जोशी जोगीदास, अम्बादास : ईडर का इतिहास भाग-1 के प्रकरण 3 में उल्लेख हुआ है कि सिसोदिया वंशज गोहादित्य (गुहा) के किसी गुफा में जन्म होने के कारण इस वंश को मेवाड़ में गुहिल वंश का प्रथम शासक माना जाता है, पृ. 18-21
4. ईडर का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ. 20
5. (अ) टॉड जेम्स : राजस्थान, जिल्द 1, पृ. 247, 251-260, 269 उद्धत

(ब) शर्मा जी.एन., राजस्थान का इतिहास, पृ. 36-47

(स) ओझा, प. गौरीशंकर हीराचन्द : मेवाड़ राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 78-80 एवं 73-77 एवं 86-87, 98, 105-110

6. ईडर का इतिहास, पूर्वोक्त, वही, पृ. 22-25
7. ईडर का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ. 28-30
8. पूर्वोक्त, पृ. 15-19
9. श्यामलदास कविराजा, वीर-विनोद, प्रथम खंड, मंयक प्रकाशन, जयपुर, 1986, (डॉ. रघुवीर सिंह द्वारा सम्पादित संस्करण) मार्च 1986, शर्मा, कुसुम : मेवाड़ का गौरव और प्राचीन इतिहास, शर्मा प्रिंटर्स, अजमेर, 1985, पृ. 151-167
10. जोशी जोगीदास अम्बादास : ईडर राज्य का इतिहास, भाग-1, पृ. 38-39
11. पूर्वोक्त, पृ. 42-44
12. आईन-ए-अकबरी, भाग-3 (संदर्भ - भाषान्तरकार, शिव मृदुल, प्रकाशक श्री आर्यावर्त्ता संस्कृति संस्थान, दिल्ली, पृ. 477-483) में

कश्मीर के हिन्दु शासकों की विस्तृत सूची दी गई है।
13. मेनारिया मिनाक्षी : नागदा का ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सर्वेक्षण, लघु शोध प्रबन्ध (अप्रकाशित) साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर, वर्ष-2006 (मेवाड़ के गुहिल शासक), पृ 46-48
14. (अ) शर्मा दशरथ : राजस्थान थ्रू द एजेज, प्रथम भाग, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा, 1995, पृ. 14, 48-50, 58-59
(ब) शर्मा, जी.एन : राजस्थान का इतिहास 1995, गुहिलों का अभ्युदय, पृ. 36-59, 42-49
15. मेनारिया नीलम : एकलिंग जी (कैलाशपुरी) का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, वर्ष 2002 (मेवाड़ के प्रारम्भिक शासक, पृ. 17-21), मेवाड़ के महाराणा, पृ. 143-169, 170-190
16. कुं. देवीसिंह मंडावा : क्षत्रिय शाखाओं का इतिहास, प्रथम भाग, पृ. 122-124, उद्धत-डॉ. मीनाक्षी मेनारिया, वही, नागदा का सर्वेक्षण, पृ. 22-24
17. यह ताम्रपत्र अजमेर राजकीय संग्रहालय में सुरक्षित है।
18. (अ) मेनारिया मिनाक्षी : पूर्वोक्त, पृ. 46-47, 28-35,
(ब) रासमाला, अनुवाद रणछोड़ भाई, उदयराम गुजराती, 1869
(स) भण्डारी सम्पत्ति राय : भारत के देशी राज्य, सुख, राज्य मण्डल बुक पब्लिशिंग, इन्दौर, 1927
(द) Narrative of Journey through the upper provinces of India, Vol-I to IIIrd, A Hamilton, London, John Murray, Alhemorle, 1826

****